भ्रूण हत्या

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भ्रूण हत्या एक सामाजिक अपराध है। स्त्री–पुरूष के परस्पर सम्बन्ध से जो स्पर्म निकलता है वह धीरे–धीरे भ्रूण का रूप धारण कर लेता है। माता का रज और पिता का वीर्य जब मिलता है तो वह शुक्र जाकर धीरे–धीरे भ्रूण का रूप धारण करता है। यह भ्रूण लड़का होगा या लड़की इसका निर्धारण गुणसूत्रों पर निर्भर करता है। यदि xx का मिलन होता है तो लड़की और यदि xy का मिलन होता है तो लड़के की उत्पत्ति होती है। यह संयोग ही है की दोनों में कौन ज्यादा शक्तिशाली है। पुरुष या स्त्री के ऊपर यह निर्भर नहीं है कि वह लड़का या लड़की पैदा कर सके। इसी को ईश्वरीय विधान कहते है। पुरुष और नारी के संयोग से सृष्टि चलती है। कोई एक सृष्टि को नहीं चला सकता। इसलिए पुरुष और नारी दोनों का सममूल्य हैं। नारी ही किसी की बेटी होती है किसी की बहू होती है किसी की दादी होती है। किन्तु आजकल समाज की विकृत मानसिकता के कारण भ्रूणहत्या का प्रचलन बढ़ गया है। स्त्री और पुरुष का अनुपात सृष्टि में पचास–पचास प्रतिशत का होना चाहिए। सृष्टि को संतुलित रखने और चलाने के लिए यह अनुपात बहुत आवश्यक है। किन्तु भ्रूणहत्या के कारण यह संतुलन बिगड़ता जा रहा है। भ्रूण परीक्षण के द्वारा जब यह पता चलता है कि वह लड़की है तो उसे गर्भ में ही मार दिया जाता है। जब बेटी ही नहीं रहेगी तो संसार कैसे चलेगा? बेटा और बेटी का समान दर्जा होना चाहिए। भारत में यह संतुलन धीरे–धीरे गड़बड़ाता चला जा रहा है। भ्रूण जब बड़ा होता है तो नर या मादा का स्वरूप धारण कर लेता है। गर्भ के 45 दिन के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि यह भ्रूण नर है या मादा। आज समाज में एक गलत धारणा बन गई है कि लड़की भार स्वरूप होती है। भ्रूण परीक्षण में जब यह पता चलता है कि भ्रूण मादा है तो लोग उसको जन्म से पहले ही नष्ट करने का प्रयास करते हैं। यद्यपि सरकार की तरफ से भ्रूण हत्या को अपराध घोषित किया गया है। फिर भी लोग इस घृणित अपराध को

करते हैं। भ्रूण हत्या महापाप है। धार्मिक दृष्टि से भी इसे पाप कहा गया है। समाज में मादा भ्रूण हत्या के कारण लिंगानुपात गड़बड़ा गया है। यदि यह कार्य जारी रहा तो समाज में अनैतिकता बढ़ेगी और समाज में लोग अविवाहित ही रह जायेगें। लड़कों की अपेक्षा लड़कियां माता–पिता के लिए अधिक सहायक होती है तो क्यों मादा भ्रूण हत्या की जाती है? इसका संरक्षण करना आवश्यक है।

लड़के अपने माता–पिता पर ध्यान नहीं देते जितना लड़कियां। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है वृद्धाश्रम का बढ़ना। घर में माता–पिता की सेवा का उत्तरदायित्व उनके पुत्रों पर होता है। लेकिन भाग–दौड़ भरी जिंदगी में लड़के इतने व्यस्त रहते हैं कि कोई माता–पिता के उपर ध्यान नहीं देकर उन्हें वृद्धाश्रम में डाल देते हैं। जिन लड़कों पर इतना भरोसा किया जाता है कि वो वृद्धावस्था में सहायक बनेगे और सुख देगें, क्या यही वृद्धावस्था का सुख है। इन सब बातों को देखकर आज के युग में मानसिकता में परिवर्तन लाना आवश्यक हो गया है। भारत में प्राचीनकाल से नारियों का आदरास्पद स्थान रहा है। नारियों के लिए कहा गया है कि– यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः अर्थात जहां पर नारियों की पूजा होती है अर्थात उन्हें सम्मान दिया जाता है वहां देवता का वास होता है। भ्रूण हत्या के पीछे जो सबसे बड़ा कारण है वह है दहेज प्रथा। भारत एक ऐसा देश है जहां पर लड़कियों के विवाह में दहेज प्रथा है। सभी लोगों के पास उतना पर्याप्त धन नहीं होता कि वो दहेज दे सकें। इस बात को ध्यान में रखकर लोग भ्रूण हत्या जैसे महान पाप करते हैं। इस प्रथा को रोका जाना चाहिए। लोगों को शिक्षित किया जाना चाहिए, मानसिकता में परिवर्तन लाना आवश्यक है। सरकार की तरफ से भी अनेक योजनाएं कन्याओं के भविष्य को ध्यान में रखते हुए चलायी जा रही है। धीरे–धीरे परिवर्तन दिखाई भी दे रहा है। लड़की की शादी के समय लड़की के परिवार वालों के द्वारा लड़के या उसके परिवार वालों को नगद या किसी भी प्रकार की किमती वस्तु बिना मूल्य में देने को दहेज कहा जाता है। दहेज एक सामाजिक समस्या है। यह गैरकानूनी है, फिर भी समाज में खुलेआम चल रहा है। दहेज के कलंक और दहेजरूपी सामाजिक बुराई को केवल कानून के भरोसे नहीं रोका जा सकता, इसको रोकने के लिए समाज के हर वर्ग को मिलजुलकर प्रयास करना पड़ेगा। दहेज की बुराई प्रायः सभी जातियों में एकसमान है। भारत

में जितने भी धर्म और सम्प्रदाय है उन सभी में यह बुराई समान रूप से व्याप्त है। दहेज का दानव धीरे–धीरे इतना भयंकर रूप धारण करते जा रहा है कि इसको अगर तत्काल समाप्त न किया गया तो भ्रूण हत्या कभी बन्द नहीं हो सकती। लड़के और लड़कियां दोनों ही समाज के कर्णधार है। दोनों का बराबर अधिकार है। लेकिन समाज की गिरी हुई सोच के कारण यह माना जाता है कि बेटी पराया धन है और विवाह होने के बाद वह दूसरों के घर चली जायेगी। यह सोचकर कुछ लोग बेटी को अधिक पढ़ाते–लिखाते नहीं। किन्तु जो लोग इस सोच से परे हैं और लड़कियों को उच्च शिक्षा देकर उसका जीवन निर्माण करते हैं, वे प्रगतिशील विचारों के होते है।